International Journal of Home Science 2019; 5(3): 130-132

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(3): 130-132
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 01-07-2019
Accepted: 03-08-2019

गुंजन दुबे
शोध छात्र गृह विज्ञान
मध्य प्रदेश भोज (मुक्त)
विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश,
भारत

कामिनी जैन
प्राचार्य, शासकीय गृह विज्ञान
महाविद्यालय, होसंगाबाद,
मध्य प्रदेश, भारत

नीलमा कुँवर
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, ईसीएम, गृह
विज्ञान महाविद्यालय, चन्द्रशेखर
आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक
विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश,
भारत

Correspondence
गुंजन दुबे
शोध छात्र गृह विज्ञान
मध्य प्रदेश भोज (मुक्त)
विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश,
भारत

बाल श्रमिकों की कार्य दशाओं का स्वास्थ्य स्तर पर प्रभाव

गुंजन दुबे, कामिनी जैन, नीलमा कुँवर

सारांश
किसी देश के बालकों की अच्छी अथवा बुरी दशा ही वहाँ के सांस्कृतिक स्तर का सबसे विश्वसनीय मापदंड होता है। बालक मानव जीवन की नींव है। बालक रूपी बीज से ही मानव वृक्ष का निर्माण होता है। यदि किसी समाज में बालक उपेक्षित अथवा तिरस्कृत है अथवा ज्यों ही उनमें कार्य करने की थाड़ी सी भी शक्ति आती है, त्यों ही उन्हें कठोर कार्यों के कोल्हुओं में जुटना पड़ता है, तो शक्ति का ऐसा दुरूपयोग, उस समाज के सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसके विपरीत यदि किसी देश में बालकों को विशेष स्थान प्राप्त है तथा वहां उनके शारीरिक व मानसिक विकास के लिए समस्त संभव प्रयत्न किए जाते हैं तो वह समाज सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत समझा जायेगा।

कुट शब्दः बाल श्रमिक, स्तर

प्रस्तावना
बालश्रम अकेले भारत की समस्या नहीं है अपितु यह एक विश्वव्यापी सत्य है। अर्न्तराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार बालश्रम बच्चों हेतु रोजगार जैसा नहीं है, न ही कोई महत्वपूर्ण कार्य अनुभव है और न ही स्कूल शिक्षा से जुड़ी प्रशिक्षता जो बच्चे की वर्तमान और भावी संभावनाओं में वृद्धि करती हो। बालश्रम अपने सबसे खराब रूप में शक्ति का दुरूपयोग है। यह बड़ों द्वारा अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए छोटे, भोले–भाले, निष्कपट, कमजोर, संवेदनशील और असुरक्षित बच्चों का शोषण है। यूनाइटेड नेशन्स चाइल्ड लेबर कमेटी के चेयरमैन होम फॉक के अनुसार कोई भी काम जो कि बच्चों के पूर्ण शारीरिक विकास पर, उनकी वांछनीय न्यनतम शिक्षा प्राप्ति के अवसर पर प्रतिकूल प्रभाव डाले या उसमें दखलंदाजी करे, ऐसे काम को बालश्रम माना जाना चाहिए। भारत का इतिहास बाल श्रमिकों की समस्या के अस्तित्व का साक्षी है। इसका कारण यह था कि उद्योगपति व कारखानों के मालिक अपने उत्पादन व्ययों को घटाने के लिए सस्ते से सस्ते श्रम का उपयोग करना चाहते थे। इस दृष्टि से बालश्रम ही सबसे सस्ता था। दूसरे, बच्चे अपने श्रम की सौदेबाजी नहीं कर सकते थे, उनसे जितने घण्टे चाहें उतने घण्टों तक काम लिया जा सकता था। काम लेने के बाद थोड़े से पैसे देकर ही उन्हें विदा कर दिया जाता था। सेवायोजकों की दृष्टि से इन विधि लाभों के कारण बच्चों को काम पर लगाने की प्रवृत्ति दिन–प्रतिदिन बढ़ती गयी। यह प्रवृत्ति केवल असंगठित उद्योगों में नहीं, वरन् संगठित उद्योगों, बागानों, खनिज उद्योगों इत्यादि सभी प्रकार के व्यवसायों में पनपती गयी। शिक्षा से बच्चे सुसंस्कृत होते हैं। उनका ज्ञान बढ़ता है किन्तु भारत में बड़ी संख्या में बच्चे स्कूल जाने या खेलने की उम्र में खराब परिस्थितियों मे मजदूरी करते हैं।

उद्देश्य
- बाल श्रमिक की सामाजिक–आर्थिक पृष्टिभूमि का अध्ययन।
- बाल श्रमिक की कार्यदशाओं तथा उनके ऊपर पड़ने वाले स्वास्थ्य का प्रभाव

अध्ययन पद्धति
शोध अध्ययन हेतु होशंगाबाद जिला का चुनाव किया गया है तथा 300 बाल श्रमिकों का चयन किया गया है जो होटल, कचरा बीनने वाले, गैरेज, कृषि, घरों और टेंट हाऊस में काम करने वाले थे। अध्ययन में चर–अचर का इस्तेमाल किया गया है। साख्यिकीय विधियां 'टी' टेस्ट, प्रतिशत और सह–संबंध का चुनाव किया गया है।

परिणाम

सारिणी 1: बाल श्रमिक की आयु

क्र0सं0	आयु (वर्ष)	संख्या	प्रतिशत
1.	7 – 8	18	6.0
2.	9 – 10	36	12.0
3.	11 – 12	89	29.6
4.	13 – 14	157	52.3
	कुल	**300**	**99.9**

छोटी आयु की अपेक्षा बड़ी आयु में बाल श्रमिक अधिक संलग्न हैं साथ ही साथ यह विडम्बना है कि अभिभावक 6–7 वर्ष में ही अपने बच्चों को कार्य में संलग्न कर आर्थिक अर्जन को मजबूर कर रहे हैं जोकि समाज के लिए चिंतनीय पहलू है।

सारिणी 2: बालश्रम का स्वरूप

क्र0सं0	बालश्रम का स्वरूप	संख्या	प्रतिशत
1.	होटल का कार्य	50	16.6
2.	कचरा पन्नी बीनना	50	16.6
3.	गैराज में कार्य	50	16.6
4.	कृषि कार्य	50	16.6
5.	घरों में कार्य	50	16.6
6.	टेंट हाऊस में कार्य	50	16.6
	कुल	300	99.6

भारत में किए गए सर्वेक्षण के दौरान पता चला कि घरेलू नौकर रखने वाले दस में से 9 परिवार 12–15 वर्ष की लड़कियों को नौकरानी के रूप में पसंद करते हैं। इसी प्रकार होटलों में झूठे बर्तनों की सफाई, मोटर गेराजों में काम करते समय तथा अन्य कार्यों में बच्चों को समुचित साधन भी उपलब्ध नहीं होते हैं इसलिए बाल मजदूरी करते समय कालिख एवं अन्य गंदगियों के शिकार हो जाते हैं। शोध अध्ययन हेतु विभिन्न कार्यों में संलग्न बाल श्रमिकों को लिया गया जो होटल, पन्नी बीनने वाले, कृषि, गैराज, घरों एवं टेंट हाऊस के कार्य में संलग्न थे। इनका चयन निदर्शन पद्धति से किया जिनकी प्रत्येक समूह से संख्या 50 एवं प्रतिशत 16.6 रहा।

सारिणी 3: बालश्रम से प्राप्त मासिक आय

क्र0सं0	मासिक आय (रू0)	संख्या	प्रतिशत
1.	1000 से कम	79	26.3
2.	1001 – 2000	82	27.3
3.	2001 – 3000	96	32.0
4.	3001 से अधिक	43	14.3
	कुल	300	99.9

आर्थिक स्थिति बालश्रम के लिए महत्वपूर्ण कारक होती है क्योंकि परिवार के पालन पोषण के लिए नन्हें हाथों को भी कार्य करने के लिए मजबूर होना पड़ता है जिसके कारण यह बाल श्रमिक खेलने के स्थान पर अर्थोपार्जन में अपना समय बिताते हैं, शोध अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि समस्त बाल श्रमिक निम्न आय वर्ग से सम्बन्धित है तथा गंदी बस्तियों में निवास होने के कारण उनकी सोच भी मात्र जीवन भरण पोषण तक सीमित है।

सारिणी 4: कार्य के दौरान बाल श्रमिकों को उपलब्ध कराया गया भोजन

क्र0सं0	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	109	36.3
2.	नहीं	191	63.6
	कुल	300	99.9

साधारणतः बच्चे जहां काम करते हैं वहां उन्हें भोजन की प्राप्ति होनी चाहिए किन्तु यह देखा जाता है कि होटलों एवं घरों में काम करने वाले श्रमिकों को भी भोजन उपलब्ध नहीं हो पाता। यह नन्हें बाल श्रमिक अपनी आंखों के सामने मालिक के परिवार या दुकान पर लोगों को खाते देख ललचाते रहते हैं, यदि उन्हें भोजन दिया जाता है तो उसके या तो पैसे काट लिए जाते हैं या भोजन के नाम पर झूठन दी जाती है। शोध अध्ययन से यह सामने आया है कि 36.3 प्रतिशत को भोजन कार्य के दौरान दिया जाता है जोकि संभवतः वे बालश्रकि ज्यादा हैं जो होटल या घरों में काम कर रहे होते हैं वहीं 63.6 प्रतिशत बाल श्रमिकों को भोजन उपलब्ध नहीं होता है एवं उन्हें स्वयं ही व्यवस्था करनी होती है।

सारिणी 5: स्वास्थ्य स्तर मापन

क्र0सं0	विवरण	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1.	शारीरिक गठन	सामान्य	दुबला	बहुत दुबला
2.	बाल	घने चमकदान	सूखे मुर्झायें हुए	कंघी करने पर अत्याधिक टूटने वाले
3.	मुँह	सामान्य	चेहरे पर चकत्ते	पूर्ण चेहरे पर सूजन
4.	होंठ	सामान्य	फटे हुए	होठ मिलने के स्थान पर कटाव
5.	कार्निया	सामान्य	सूखापन	घाव
6.	नेत्र श्लेषिमा	सामान्य	लाल	सूखापन
7.	मसूड़	सामान्य	फूले हुए	रक्तस्त्रावी
8.	दांत	सामान्य	ऊपर से टूटे हुए	कीड़े लगे
9.	जिव्हा	सामान्य	लालवर्ण/पीतवर्ण	कटी हुई/दरारें पड़ी हुई
10.	गला	सामान्य	थोड़ा बढ़ा हुआ	अत्यंत बढ़ी हुई
11.	त्वचा	चमकदार स्वस्थ्य	सुखापन/दरारें एवं झुर्रियाँ	चकत्ते एवं उभरे दाने
	कुल प्रतिशत	39.0	45.0	26.0

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बाल श्रमिक अत्यंत दीनहीन स्थिति में हैं उनका स्वास्थ्य स्तर प्रभावित हो रहा है। अध्ययन से स्पष्ट हैं कि मात्र 39.0 प्रतिशत बाल श्रमिक ही शारीरिक तौर पर स्वस्थ्य कहे जा सकते हैं। वहीं 45.0 प्रतिशत सामान्य एवं 16.0 प्रतिशत गंभीर बीमारियों के शिकार हो रहे हैं जो कि चिंताजनक स्थिति को दर्शाता है एवं उनके स्वास्थ्य स्तर में सुधार के लिए कठोर कदम उठाने की परिवार एवं समाज को आवश्यकता है।

निष्कर्ष

हमारे देश में बालश्रम की समस्या काफी गम्भीर है। बाल श्रम से अभिप्राय यह है कि कोई एक बालक जब कार्य करता है तथा जिसके बदले में उसे कुछ प्राप्त होता है इसकी अवधारणा में मुख्य तीन तथ्य सामने आते हैं। प्रथम आर्थिक दृष्टि से बालकों से लम्बे समय तक जोखिम भरा कठोर कार्य करवाकर उन्हें कम मजदूरी या भुगतान करना। दूसरा बालश्रम से व्यक्तित्व का विघटन होता है। तीसरा यह एक सामाजिक बुराई है क्योंकि समाज में बाल श्रमिकों के व्यक्तित्व विघटन के परिणामस्वरूप अनेक सामाजिक समस्यायें उत्पन्न होती हैं जो समाज के लिए हानिकारक हैं।

सुझाव

1. बाल श्रमिकों की शिक्षा के लिए ब्रिज कोर्स खोले जाने चाहिए जिससे वह कार्य के साथ–साथ शिक्षा ग्रहण कर सकें।

2. बाल कानूनों का कड़ाई से पालन होना चाहिए।
3. सरकार द्वारा बाल श्रमकों के लिए वोकेशनल ट्रेनिंग कोर्स चलाने चाहिए।

संदर्भ

1. बिष्ट, शालिनी (1994–95) श्रीनगर के होटल उद्योग में कार्यरत बालश्रमिक का एक अध्ययन गढ़वाल विश्वविद्यालय।
2. घोष, अरूण (1990) कामकाजी बच्चों की आवश्यकतायें एवं जीवन दशायें शैक्षिक योजना एवं प्रशासन पत्रिका एन.सी.ई. आर.टी., नई दिल्ली।